Dr. Md. Arshad Ali
Deptt. of Philosophy
Jagjiwan College
V.K.S.U, Ara.

लाइबनीज का ईश्वर विज्ञान (प्रथम भाग)

Theology of Leibniz (First Part)

⟹ लाइबनीज अनेकवादी है क्योंकि उन्होंने द्रव्य की संख्यात्मक अनेकता को माना है जिसे उन्होंने चिद्बिन्दु कहा है तथा बताया है कि प्रत्येक चिद्बिन्दुओं में गुणात्मक भेद है, अर्थात गुण की दृष्टि से चिद्बिंदुओं की पाँच अवस्थाएँ है। इन पाँच अवस्थाओं के चिद्बिन्दुओं में जो सर्वोच्च या परम है उसे ही उन्होंने परम चिद्बिन्दु अथवा ईश्वर कहा है। इसी परम चिद्बिन्दु अर्थात् ईश्वर ने अन्य चिद्बिन्दुओं से विश्व और विश्व की सारी वस्तुओं का निर्माण किया है। यह ईश्वर ही विश्व के सारे सत्यों एवं सत्ताओं का कारण और आधार है। लाइबनीज के ईश्वरीय स्वरूप पर प्रकाश डालने से पूर्व उसके अस्तित्व के पक्ष में दिए गये लाइबनीज के प्रमाणों पर विचार कर लेना आवश्यक होगा। लाइबनीज ने ईश्वरीय अस्तित्व के पक्ष में चार प्रमाण प्रस्तुत किये है —

Date 19/05/20
Page 2

~~(1) अस्तित्व प्रमाण (Ontological~~

(1) ~~[illegible]~~ तात्विक प्रमाण (Ontological Argument) —

लाइबनीज का ईश्वरीय अस्तित्व के पक्ष में दिया गया पहला प्रमाण तात्विक प्रमाण है जो कोई नया प्रमाण नहीं है। सबसे पहले Anslem ने इस प्रमाण के आधार पर ईश्वरीय सत्ता को प्रमाणित करने का प्रयास किया था और बाद में देकार्त तथा अन्य दार्शनिकों ने। उनका तर्क था कि ईश्वर एक पूर्ण सत्ता है अतः वह अस्तित्ववान है क्योंकि यदि ऐसा नहीं माना जाए तो इसका अर्थ होगा कि वह अपूर्ण है, उसकी पूर्णता खंडित होती है। अतः ईश्वर का अस्तित्व है।

जहाँ तक लाइबनीज का सम्बन्ध है उन्होंने न तो इस विचार को अमान्य कहा है और न ही उन्होंने इसे इसी रूप में स्वीकार कर लिया है। इससे भिन्न उनका तर्क यह है कि ईश्वर एक पूर्ण सत्ता है और वही सारी पूर्णता का आधार है। पूर्णता का अर्थ यह है कि ईश्वर पूर्ण है इसलिए ईश्वरीय अस्तित्व को ईश्वर का अंग माना जाना चाहिए। अतः ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है।

(2) विश्व सम्बन्धी प्रमाण (Cosmological Argument) — यह प्रमाण मुख्य रूप से विश्व को दिये हुए

कार्य के रूप में मानकर कारण कार्य नियम की सहायता से ईश्वरीय अस्तित्व को प्रमाणित करने का प्रयास करता है। Aristotle तथा देकार्त ने इस प्रमाण के आधार पर ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया था। यदि विश्व को एक कार्य माना जाए तो इसका भी अवश्य ही कुछ न कुछ कारण होगा। पर कारण कार्य की शृंखला अनन्त होती है। यदि इस इस शृंखला का कोई प्रारम्भ बिन्दु नहीं माना जाए तो परिणाम यह होता है कि हम अनवस्था दोष के शिकार हो जाते हैं। इसलिए Aristotle ने इस अनवस्था दोष से बचने के लिए 'Unmoved Mover' के रूप में और देकार्त ने 'First Cause' के रूप में ईश्वर को सिद्ध किया था।

परन्तु लाइबनीज ने इस प्रमाण को एक नये रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार यह विश्व आकस्मिक (Accidental) है। अतः इसकी व्याख्या के लिये पर्याप्त कारण का होना आवश्यक है। आकस्मिक के सहारे आकस्मिक की व्याख्या नहीं की जा सकती। आकस्मिक विश्व की व्याख्या के लिए किसी आवश्यक सत्ता को मानना आवश्यक है। अतः लाइबनीज का तर्क यह है कि पर्याप्त

हेतु नियम आकस्मिक विश्व की व्याख्या और कार्य के लिए एक आवश्यक सत्ता को मानने के लिए बाध्य करता है और वह आवश्यक सत्ता ही लाइबनीज के अनुसार ईश्वर है। अतः ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित है।

(3) शाश्वत सत्ता सम्बन्धी प्रमाण (Argument from the Eternal Truth) — लाइबनीज का यह प्रमाण ज्ञान मीमांसा पर आधारित है। उनके अनुसार सत्य दो प्रकार के होते है- नित्य और अनित्य। नित्य सत्य उस सत्य को कहते है जो सदा के लिए असंदिग्ध रूप से सत्य है ही, जैसे 2+2=4 अथवा त्रिभुज के तीनों कोणों का योगफल दो समकोण के बराबर होते है इत्यादि। इन उदाहरणों में जो कुछ भी कहा गया है वह सदा और सभी परिस्थितियों के लिए असंदिग्ध रूप से सत्य है। लेकिन इससे भिन्न वह सत्य जो सापेक्ष हो अर्थात जिसकी सत्यता एक संदर्भ में मानी जाए पर दूसरे संदर्भ में नहीं तो उसे अनित्य सत्य कहा जाएगा। जैसे यदि यह कहा जाए कि त्रिभुज के आधार पर के कोण आपस में बराबर होते है तो यह एक ऐसा सत्य है जो एक प्रकार के त्रिभुज के संदर्भ में तो सत्य है पर दूसरे त्रिभुजों के संदर्भ से असत्य। इसलिये इस सत्य को अनित्य सत्य कहा जाएगा।

अब लाइबनीज का तर्क यह है कि सत्य सत्ता के सार का एक अंग है। अतः यदि 'नित्य सत्य' है तो 'नित्य सत्ता' का भी अस्तित्व है। और यह नित्य सत्ता ही ईश्वर है। अतः ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है।

(4) पूर्व स्थापित सामन्जस्य नियम सम्बन्धी प्रमाण (Argument from Pre-established Harmony) — लाइबनीज के अनुसार चिद्बिन्दु अपने स्वरूप में छिद्ररहित है पर उनके बीच एक आवश्यक सामन्जस्य बना है जिसके कारण वस्तुओं का निर्माण होता है। पर इस सामन्जस्य का कारण क्या है? मनुष्य को इसका कारण नहीं माना जा सकता क्योंकि वह स्वयं इसी विश्व का एक सदस्य है जो इन्हीं छिद्ररहित चिद्-बिन्दुओं के संयोग से बना है। स्पष्ट है कि इसी सामन्जस्य का कारण निश्चय ही विश्व से परे अथवा बाहर होगा और यह भी निश्चित है कि उसे इन चिद्बिन्दुओं के छिद्ररहित होने का ज्ञान होगा क्योंकि तभी उसने इन छिद्ररहित चिद्बिन्दुओं के बीच सामन्जस्य की स्थापना की होगी। लाइबनीज के अनुसार वह सत्ता कोई दूसरी नहीं बल्कि ईश्वर स्वयं है। अतः ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध है।

इस प्रकार हम पाते है कि लाइबनीज ने इन चार प्रमाणों के बल पर ईश्वरीय अस्तित्व को प्रमाणित किया है जिनमें यह अन्तिम प्रमाण लाइबनीज की एक मौलिक देन है तथा अन्य प्रमाणों की तुलना में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित कर लेने के बाद लाइबनीज ईश्वरीय स्वरूप की व्याख्या करते है।

लाइबनीज एक ईश्वरवादी है। ईश्वर निर्माता है, उसी ने सारे चिद्बिन्दुओं की रचना की है जिससे सम्पूर्ण विश्व बना है। लाबनीज के अनुसार चिद्बिन्दु शाश्वत है और इसलिए नित्य है। परन्तु इन चिद्बिन्दुओं की नित्यता उस अर्थ में नहीं जिस अर्थ में ईश्वर नित्य है। क्योंकि जहाँ एक ओर ईश्वर स्वनिर्मित है वहाँ दूसरी ओर इन चिद्बिन्दुओं का निर्माण हुआ है जिसका निर्माता ईश्वर है इसलिए यदि ईश्वर चाहे तो वह इन चिद्बिन्दुओं का नाश भी कर सकता है। इससे स्पष्ट होता है कि ईश्वरीय नित्यता निरपेक्ष है तथा चिद्बिन्दुओं की नित्यता सापेक्ष।